UGC Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

Sahitya Vithika

Peer Reviewed Bilingual Bi-Annual International Reserach Journal

(अर्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

वर्ष : ७ | अंक : 13 | दिसम्बर : 2018

अभिनंदन को अभिनंदन....

9	अधूरी देह की पूरी कहानी : जिंदगी ५०-५०	38

संपादक

डॉ. दिलीप मेहरा

UGC Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

वर्ष : 8 अंक : 13 डिसे.-2018

:: संपादक ::

डॉ. दिलीप मेहरा

:: परामर्शक ::

डॉ. पारुकान्त देसाई

डॉ. दयाशंकर

डॉ. दिनेश कुशवाह (रीवा)

डॉ. सुरेश गढवी

तेजेन्द्र शर्मा (लंदन)

:: संरक्षक ::

डॉ. मालती दुबे

डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

:: सम्पादक मण्डल ::

डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)

डॉ. प्रेमचन्द कोराली

डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन

श्री एन. टी. गामीत

:: प्रकाशक ::

उत्कर्ष प्रकाशन, कानपुर

:: कला सज्जा ::

मयूर इसरामा

:: व्यवस्थापकीय पता ::

शोभा मेहरा

यश भवन, प्लोट नंबर-१४२३/१

शालिनी अपार्टमेंट के पीछे,

नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर,

जि. आणंद - ३८८१२०

Email : mehradilip52@gmail.com

सचलभाष : 94263 63370

Peer reviewed bilingual bi-annual International research journal

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं । समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद, गुजरात होगा।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक २०० रुपये

पंचवार्षिक १००० रुपये

आजीवन २५०० रुपये

संस्था के लिए

वार्षिक ३०० रुपये

आजीवन ३००० रुपये

अनुक्रमणिका

१.	मेरी दृष्टि में 'मकान पुराण'	रूपनारायण सोनकर	३
२.	सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में मिथकीय चिन्तन'	डॉ. हमीर पी. मकवाना	५
३.	तुलसीदास के काव्य में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना	सचिन कुमार	१०
४.	'गिलिगडू' उपन्यास में वृद्धों की समस्या	इन्दिरा पढ़ियार	१३
५.	'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में विस्थापन की समस्या	रोहित चौहाण	१५
६.	नारी केन्द्रित कथा साहित्य में विवाहेतर काम सम्बन्ध	डॉ. पार्वती जे. गोसाई	१७
७.	''नागार्जुन : एक अवलोकन''	पिन्टू यादव	१९
८.	''दुष्यंत कुमार की गज़लों में राजनीतिक स्वर''	डॉ. मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला	२१
९.	केदार शर्मा निर्मित 'चित्रलेखा' चलचित्र और भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' उपन्यास की तुलना	महिडा प्रदिपकुमार	२५
१०.	'सांप्रदायिकता और भीष्म साहनी का साहित्य'	प्रा. रोहित संगीता जी.	२८
११.	प्रवासी साहित्य का अर्थ एवं स्त्री कथाकार	भाविनी एन. चौधरी	३२
१२.	'बेखुदी की धूप' मेरी दृष्टि में 'धूप के रंग' 'बेखुदी की धूप'	डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'	३४
१३.	अधूरी देह की पूरी कहानी : जिंदगी ५०-५०	डॉ. अनु पाण्डेय	३८
१४.	'शेर के पिंजड़े में' कहानी में नारी संवेदना	महेन्द्र कुमार	४३
१५.	हिन्दी पत्रकारिता और 'नव निकष'	डॉ. संगीता चौहान	४७
१६.	'सूधियों की सुगंध' में प्रतिबिंबित युगीन संदभ	प्रो. डॉ. अमी दवे	५२
१७.	चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में आतंकवाद	चिराग एस. चावडा	५४
१८.	हिन्दी के विविध रूप	डॉ. हसमुख परमार	५७
१९.	सामाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य करती दिलीप मेहरा की कहानियाँ	डॉ. अनु पाण्डेय	६२
२०.	मैत्रेयी पुष्पाजी के उपन्यासों में वेश्या समस्या	श्री प्रवीणकुमार एन. चौधरी	६५
२१.	महिला शिक्षा का महत्त्व	परमार औचित्यादेवी एस.	६७
२२.	स्त्रियों के उत्थान में डॉ. आम्बेडकर का प्रदान	परमार दिपीका एम.	६९
२३.	सामाजिक, सांस्कृतिक अभ्युत्थान और गोविंद गुरू	डॉ. धनंजय चौहान	७१
२४.	उत्कंठेश्वर महादेव : धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व	डॉ. शैलेषगिरी बी. गोसाई	७४
२५.	महिलाओं की वर्तमान स्थिति	डॉ. दलीबहन वी. चौधरी	७७
२६.	महिला सशक्तिकरण : एक सोच	डॉ. जोराभाई बी. पटेल	८०
२७.	प्राचीन भारतीय वैदिक साहित्य : एक अभ्यास	डॉ. सुरेशकुमार चेलाभाई पटेल	८२
२८.	दलित वैचारिकी विमर्श	प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल	८५
२९.	जोसेफ मेकवान के उपन्यासों में दलित सन्दर्भ	परमार हितेष बी.	८७
30.	Draupadi: A Dharmadarshini of the Mahabharata: Role model for Today's Women	Dipti C. Macwan	89
31.	Impact of Motivation on Employee Performance in Organizations	Ms. Chitra Saradva	92
32.	The Eunuches (Hijras) in india	Dr. Dilip R.Amin	95

काव्य सृष्टि : • डॉ. अनु पाण्डेय - पृ.१२ • रूपनारायण सोनकर - पृ.४६ • डॉ. दिलीप मेहरा - पृ.७९ • डॉ. सतीन देसाई - पृ.३७ • डॉ. संगीता चौहान - पृ.५१ • प्रा. संगीता रोहित - पृ.८१ • मालती दुबे - पृ. ४२

• 'मकान पुराण' के बहाने - पृ.४ • राष्ट्रीय संगोष्ठी - पृ.५६

• पुस्तक लोकार्पण एवं अतिथि व्याख्यान - पृ.७६

सम्पादकीय

लोकतंत्र को बौद्धिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं धन पशु अपनी अपनी तरह से चर रहे हैं। साहित्य समाज की अगुआई कर रहा है या नहीं, कह पाना मुश्किल हैं। लेकिन कुँवर नारायण, विष्णु खरे नामवरसिंह एवं कृष्णा सोबती के दिवंगत होने से साहित्य जगत में सन्नाटा पसरा है। ये सभी रचनाकार नवजागरण के एजेन्डे को अग्रसारित कर रहे थे या अड्डे बाजों की तरह साहित्य एवं संस्थानों को चर रहे थे। इसकी मिली जुली प्रतिक्रिया साहित्य जगत में देखने को मिल रही है। समसामयिक अस्मिता विमर्शों को तकरीबन नकारने वाले रचनाकारों को 'साहित्य वीथिका' परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है। साहित्य जन सामान्य से क्यों कटा ? इसके लिए हमारे उपरोक्त पुरनिए कहाँ तक जवाबदार हैं ? इसको भी खतियाना चाहिए। विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों की आरक्षित रिक्तियों को तीन या पाँच बार विज्ञापित कराकर उसके बाद उसे सामान्य वर्ग में डाल दिया जाता था। जो शोधछात्र नामवर सिंह जैसे मजबूत खूँटे को पकड़ता था, उसी की नियुक्ति सामान्य या आरक्षित वर्ग में नामवर सिंह ने किया। अपने जैसे लोगों को नामवर सिंह ने क्यों नहीं नियुक्त किया ? यह भी विचारणीय प्रश्न है। और आगे की बात कहे तो प्रतिष्ठित प्रकाशक को पकड़कर उनके अड्डे में बैठने वाले लोगों को छपवाया तथा तमाम रचनाकारों को गोरखनाथ पांडेय जैसी राह पकड़ा दी। निश्चित रूप से कुँवरनारायण, कृष्णा सोबती, विष्णु खरे एवं नामवरसिंह रचनाकार एक सीमित दायरे में पढ़े जाते हैं। यदि नामवर की आलोचना आकाशधर्मी होती तो तमाम रचनाकार घुट-घुट कर जीवन न जीते। नामवरसिंह खूब अधीत व्यक्ति होने के कारण नामी भी थे। उन्हें अन्य साहित्य का भी गहरा ज्ञान था परंतु उन्होंने जो-जो नियुक्तियाँ की उनका भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए। फिलहाल जिस तरह से बिच्छू के बच्चे बिच्छू को खा जाते हैं उसी तरह नामवर या उन जैसे आलोचकों को उनके शिष्य रूपी बच्चों ने खा डाला। इन रचनाकारों के न रहने पर इनकी विद्वत्ता को हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और सवाल क्या साहित्य से हिन्दुस्तान का भला होगा ? नेहरु के मरने के बाद भी यह बात सामने आयी थी। फिलहाल इस रिक्ति को तमाम जनधर्मी रचनाकार भरेंगे।

मित्रों मृत्यु सब की होती है। इतिहास किसी को माफ नहीं करता है और करेगा भी नहीं। निवृत्तिमार्गी भारत में आकाश धर्मी व्यक्तियों को ढूँढ़ना पड़ रहा है। आत्मावलोकन करके ही भारतीय शिक्षा को पारदर्शक बनाया जा सकता है। किसी भी क्षेत्र की दबंगई लोकतंत्र कब तक बर्दाश्त करेगा। फिलहाल नामवरजी की वक्तृत्त्व एवं अध्येता दृष्टि को सतत् श्रद्धांजलि।

भारतीय सुरक्षा दलों की शौर्यगाथा अतुलनीय है। पुलवामा एवं देश की सीमाओं पर अब तक जो भी जवान एवं नागरिक शहीद हुए हैं, 'साहित्य वीथिका' परिवार उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता है। भारतीय मातृशक्ति ऐसे सपूतों को सदैव पैदा करती रहें। अभिनंदन का अभिनंदन शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता है। फिलहाल हर वर्ग के लोगों को गद्दारी छोड़कर राष्ट्रहित में लगना होगा। पुनः हमें चंदबरदाइ, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन जैसे रचनाकारों की जरूरत है।

- उपसंपादक

डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल